International Journal of Advanced Scientific Research
ISSN: 2456-0421; Impact Factor: RJIF 5.32
www.allscientificjournal.com
Volume 1; Issue 6; September 2016; Page No. 09-10

जोंक (लीच) का चिकित्सीय अध्ययन : यूनानी चिकित्सा पद्धति के नजरिये से

[1] डॉ0 राजेश, [2] डॉ0 मुम्ताज अहमद, [3] डॉ0 मो0 एहसान अंसारी

[1, 2] अनुसंधान अधिकारी (यू0) वैज्ञानिक, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पटना, बिहार, भारत।
[3] अनुसंधान अधिकारी (यू0) वैज्ञानिक, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (यूनानी), इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
यूनानी चिकित्सा पद्धति में बिमारियों का इलाज चार विधाओं से किया जाता है। जिसमें से इलाज बिद तदबीर (रेजीमेनल थेरेपी) द्वारा इलाज, एक बहुत ही अहम् इलाज तरीका है। इसमें लगभग 34 रेजीम हैं जैसे– हिजामा (सिंघिया), हमाम, नुतुल, मसाज, जोंक इत्यादि। जोंक द्वारा बहुत सारे बिमारियों का इलाज बिना किसी दुष्प्रभाव के किया जाता हैं। इसके द्वारा अंदर के मॉर्बिड ह्यूमोर को निकलकर बीमारी का निदान किया जाता हैं। जोंक के लार में बहुत सारे एंजाइम पाए जाते हैं जो की मानव शरीर के लिए बहुत ही फायदेमंद होते हैं।

मूलशब्द: यूनानी चिकित्सा, इलाज बिद तदबीर, जोंक।

प्रस्तावना
यूनानी चिकित्सा पद्धति में बिमारियों का उपचार चार विधाओं से किया जाता है– इलाज बिद तदबीर (रेजिमेन द्वारा), इलाज बिल गिज़ा (खाद्य पदार्थों द्वारा इलाज), इलाज बिल दवा (औषधि द्वारा इलाज) और इलाज बिल यद् (आपरेशन द्वारा)। रेजीमेनल थेरेपी में 34 से ज़्यादा रेजीम (तदवीर) होते हैं, जिसमें से जोंक द्वारा उपचार करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

जोंक का इतिहास 2500 साल पुराना है, जब यह ब्लड लेटिंग के तौर पर अन्सिएंट इजिप्ट में प्रयोग किया जाता था। जोंक (लीच) नाम सर्वप्रथम लिंनाक्स ने 1758 ए डी में दिया। ये फाइलम–ऐनेलिडा और क्लास–क्लीटेल्लटा से सम्बन्ध रखते थे। सामान्य अध्ययन के तौर पर जोंक को 4 सबक्लास, 3 ऑर्डर, 10 फैमिलीज़, 16 सबफैमिलीज, 131 जनेरा और 696 से अधिक स्पेसीज में बांटा गया है। भारत में लगभग 45 प्रकार की जोंक पाई जाती है। इसमें चिकित्सा के उद्देश्य से मुख्यतः हिरुडिनेरिया ग्रनुलोसा और हिरुडो मेडिलिनालिस उपयोग में लाया जाता है। हिरुडिनेरिया ग्रनुलोसा मद्रास, केरल, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, और पंजाब में ज़्यादा पाए जाते हैं। हिरुडो मेडिलिनालिस वेस्टर्न वर्ल्ड में बहुतायत प्रयोग में लाई जाती है। सन 1884 में ह्यक्रेफ्ट ने सर्वप्रथम खोज किया की इसकी लार में हिरुडिन नामक एन्टीकोएगुलेंट पदार्थ पाया जाता है।

यह उभयलिंगी होता है। इसका शरीर लम्बा, चपटा, एवं खंडों में विभक्त रहता है। यह परजीवी होता है। इसके शरीर के दोनों सिरों पर पोषक से चिपकने के लिए चूषक होते हैं। इसके अगले चूषक के मध्य में टिकोना मुखछिद्र होता है। यह सामान्यतः साफ पानी वाली झील, तालाब और नदी में पाई जाती है। इसका आकार इसकी प्रजाति के आधार पर बड़ा या छोटा होता है और लगभग 5 मिली मीटर से 25 सेंटीमीटर तक लम्बा होता है। लेकिन गेयण्ट स्पेसीज (अमेजोनियन लीच–हैमेनटेरिया गहिलियानी) लगभग 50 सेंटीमीटर तक लंबे होते हैं।

जोंक को अलग–अलग भाषाओं में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। जैसे हिंदी– जालु, संस्कृत– जालोका, उर्दू–जोंक, अरबी–अल्क, तेलगु–जलगुटयु, तमिल–आततार्इ, कन्नड़ा– जिगनेय, तुर्की–सलूक, ग्रीक–बडेल्ला, लैटिन–हिरुडो, परशियन–जूलू, अंग्रेजी– लीच इत्यादि।

इसके लार में 100 से अधिक विभिन्य जैविक रूप में सक्रीय प्राकृतिक पदार्थ होता है जो इसके लार के माध्यम से बाहर निकलता है। जिसमें से कुछ निम्नवत हैं–

1. हिरुडिन– यह थ्रोम्बिन को बाइन्ड करके खून के जमाव को रोकता है।
2. कैलिन– यह वॉन विल्लेब्रांड बाइंडिंग को बंद कर खून के जमाव को रोकता है।
3. डेस्टबलिज– यह रक्त वाहिनियों में फाइब्रिन को घोल कर खून में थक्का बनने से रोकता है।
4. एग्लिनस–स्वप्रतिरक्षित विमारियों जैसे– गठिया, छाजन आदि में सूजन को कम करता है।
5. बड़ेल्लिंस– सूजन को कम करने, ट्रिप्सिन, प्लाज़्मिन और अकरोसिन को रोकने में काम आते हैं।
6. ह्यलुरोनएडज– यह मूड में सुधार, प्रतिरक्षा प्रणाली और उपापचय की गतिविधियों को सामान्य रखता है। ऊतकों के आक्सीजन संतृप्त में सुधार लाता है।

यूनानी अतिब्बा के अनुसार, चिकित्सा के लिए हर जोंक अच्छी नहीं होती है। सामान्य तौर से चिकित्सा के उद्देश्य से अच्छी जोंक वह मानी जाती है जो उस पानी में पैदा हो जिस पर काई जमीं होती है और जिसमें छोटे–छोटे मेढक पाए जाते हों। जिसका सिर छोटा और कलेजी के रंग का हो। शरीर चूहे की दुम के समान होती हो। वह जोंक जो गंदे पानी और कीचड़ में पाई जाये, जिसके शरीर पर नीले रंग की व चमकदार धारियां हों और रंग बिरंगे परिंदों के समान हो, उपयोग के लिए अच्छी नहीं होती हैं।

जोंक लगाने का तरीका
जोंक को पकड़ कर साफ पानी से साफ करें और पानी में डाल कर उसकी रफ्तार देखें, जो ज़्यादा तेज़ हो उसे कपड़े से साफ कर के लगाते हैं।

जिस स्थान पर जोंक लगानी होती है उस स्थान को नमक के पानी से धोकर, हाथ या मुलायम कपड़े से रगड़कर सुर्ख कर लेते हैं। अगर फिर भी जोंक न पकड़े तो मुल्तानी मिट्टी या किसी जानवर का खून लगायें। इस पर भी जोंक न चिपके तो उस स्थान पर सुई से हल्का सा चुभोयें, जब खून निकलने लगे तब जोंक को लगायें।

सामान्यतः जोंक अपनी इच्छानुसार एक बार में 2–20 मिली लीटर खून 10–30 मिनट के अंदर चुसती है।

निकालने का तरीका

जोंक खराब खून चुसकर खुद बा खुद छोड़ देती है। अगर ऐसा न हो तो उस पर थोड़ा सा राख या हल्दी पाउडर छिड़क कर अलग कर लेते हैं।

जोंक निकालने के बाद उस जगह पर सिंघिया लगाकर इर्द–गिर्द के जमें हुए खून को चूस लेते हैं, जिससे कोई नुकसान का खतरा न हो।

सामान्यतः खून स्वतः बंद हो जाता है, अगर ऐसा न हो तो उस जगह पर हाबसिसूद्दम (खून बंद करने वाली) दवायें जैसे– डम्मुल अखवेन, गुल ए अरमानी, संगजराहत आदि लगायें।

उपचार

शेखउर रईस और अतिब्बायें हिन्द के मुताबिक अमराजे जिल्द (चर्म रोग) के लिए जोंक का इस्तेमाल बहुत ही फायदेमंद है।

1. पुराने चर्म रोग जैसे – दाद, खुजली, सोरियासिस, एक्ज़िमा, मुँहासे, नासूर, लाल झाँई आदि।
2. दर्द और सूजन को कम करने में जैसे– गठिया रोग।
3. इमतेला– मॉर्बिड ह्यूमोर्स को अंदर के ऊतक से निकलने में जैसे– वेरीकोस वैन।
4. गंजापन, लीम्फडेनाइटिस, फायलेरिया
5. आपरेशन के बाद ब्लड क्लोटिंग से बचने के लिये।
6. कटे हुए उंगली और अंगूठे में पुनः खून का संचार बढ़ने में।

निषेध

खून की कमी, हीमोफीलिया, ल्यूकेमिया, गर्भावस्था, बच्चों, विर्द्धावस्था, ब्लीडिंग डिसऑर्डर इत्यादि में जोंक लगाना निषेध है।

निष्कर्ष

यूनानी चिकित्सा पद्धति में रेजीमेनल थेरेपी के तहत जोंक थेरेपी का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यह इलाज के लिये एक सुरक्षित और प्रभावकारी प्रणाली है। इसके लार में बहुत सारे एंज़ाइम पाए जाते हैं, जो की मानव जीवन के लिये, बिमारियों से बचने के लिये, बिमारियों के उपचार के लिये एवं प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ने के लिये आवश्यक होते हैं। इसके प्रयोग से बहुत सारी बिमारियों जैसे– गठिया, चर्म रोग, ब्लीडिंग डिसऑर्डर इत्यादि ठीक किया जाता है। अतः जोंक प्रणाली का उपयोग कर औषधियों के कई तरह के दुष्प्रभाव से बच कर रोगी को निरोग किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. इब्न सीना, अल कानून फिल तिब, 2 एडिशन, इंग्लिश ट्रांसलेटेड बाई मजहर एच् पाशा (अन्तर सर्विसेज प्रेस करांची, पाकिस्तान), 1998, 408–409.
2. अली बिन रब्बन टाबरी, फिरदौसुल हिकमत, उर्दू ट्रांसलेटेड बाई मोहम्मद आदिल शाह सम्भली (फैसल पब्लिकेशन, देवबंद), 2002, 306.
3. हमदानी एस के, उसूले तिब (कोमि कौंसिल बराई फरोग उर्दू जुबान, नई दिल्ली), 2001, 476–477.
4. हकीम एम. बुस्टानुल मुफरादात. नई दिल्ली, इदारा किताबुल शिफा, 2000, 138.
5. तन्जील अहमद एंड मोहम्मद अनवर. क्लीनिकल इम्पोर्टेंस ऑफ लीच थेरेपी. इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नोव्लेज. जुलाई 2009; 8(3): 443–445.
6. सिंह अखिलेश कुमार. एनाल्जेसिक एंड एंटीइंफ्लामेट्री एक्टिविटी ऑफ लीच थेरेपी इन दा मैनेजमेंट ऑफ आर्थराइटिस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्मेसी. अक्टूबर 2011; 2(12): 172–174.
7. मालिक इतरत एट अल. हिस्टोरिकल आस्पेक्ट ऑफ लीच थेरेपी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेल्थ साइंस एंड रिसर्च. जून 2013; 3(7): 78–83.
8. ए एम अब्दुलकादिर एट अल. लीच थेरापियुटिक एप्लिकेशन्स. इंडियन जर्नल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंस, मार्च– अप्रैल 2013; 127–134.
9. अरशद इकबाल एट अल. रोल ऑफ लीच थेरेपी इन एलोपेसिया बरबई. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लेटेस्ट रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी. जनवरी–फरवरी 2015; 4(1):142–145.
10. प्रकाश जय एट अल. इफेक्ट ऑफ लीच थेरेपी इन क्रोनिक अलसर. इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च. सितंबर 2015; 4(1): 142–145.